



मौलाना हसरत मोहानी का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान

Yasmeen

M.A. (HISTORY), B.ED, NET FIVE TIME

ABSTRACT

इस शोध पत्र में मैंने **मौलाना हसरत मोहानी** का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों में योगदान के बारे में अध्ययन किया है। गुलाम भारत को आज़ाद कराने के लिए कई आंदोलन हुए इन आंदोलनों में बहुत से हिन्दू-मुस्लिम नेताओं ने भाग लिया और अपना अपना विशेष योगदान दिया। इन नेताओं में बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिनचंद्र पाल, सुभाषचंद्र बोस, मौलाना हसरत मोहान, मौलाना अबुलकलाम, मौलाना मोहम्मद अली, मौलाना शौकत अली आदि थे। भारतीय इतिहास में आंदोलन को एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देख सकते हैं। आंदोलन एक महत्वपूर्ण आधार बना जिस पर आगे चल कर देश को आज़ादी प्राप्त हुई है।

इसी आज़ादी को दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान **मौलाना हसरत मोहानी** का भी रहा है। यह एक प्रसिद्ध भारतीय मुस्लिम विद्वान, कवि(शायर), लेखक, पत्रकार, प्रसिद्ध राजनीतिक, निडर और बेबाक स्वतंत्रता सेनानी थे। यह हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए समर्पित थे। देश के बटवारे और अलग मुस्लिम राष्ट्र(पाकिस्तान) के विरोधी थे। वह बालगंगाधर तिलक के सिद्धांत **"आज़ादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"** के कट्टर हिमायती थे। कांग्रेस के सदस्य बने लेकिन हमेशा पार्टी के गरमदल के साथ रहे। **सम्पूर्ण स्वराज्य (complete independence) उनका नारा था।** विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका रही। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के तमाम बड़े-बड़े नेताओं से उनके निकट के संबंध थे। यह अध्ययन हमें मौलाना हसरत मोहानी के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान को जानने में मदद करेगा।

KEYWORDS: कांग्रेस के अधिवेशन में शिरकत, गिरफ्तारी व सज़ा, कांग्रेस की सदस्यता, पत्रकारिता।

प्रस्तावना

मौलाना हसरत मोहानी जिनका पूरा नाम **सैय्यद फजलुल हसन** था [ये उन्नाव के कस्बे मोहान में पैदा हुए थे]। एक समय था जब जिला उन्नाव में मोहान एक तहसील था अब वह टाउन है। मौलाना हसरत मोहानी ने शुरू से शिक्षा घर पर हासिल की। इन्होंने **सिकंदर नामा, बहारे दानिश और 'इंशाए मोनिस'** जैसी उर्दू-फारसी साहित्य किताबों का गहन अध्ययन किया।

घरेलू शिक्षा के बाद 1890 में मौलाना हसरत मोहानी ने मिडल स्कूल में प्रवेश लिया। इसके पश्चात मौलाना हसरत मोहानी को फतेहपुर हसवा के Govt-highschool में भेजा गया। इन्होंने यहां मौलाना नूर मोहम्मद, आसिफ नियाज़ अहमद बरेलवी जैसे शिक्षकों की देख रेख में पढ़ाई की। ये सभी शिक्षक देशभक्त थे, और अंग्रेजों से अपने देश को आज़ाद कराना चाहते थे। यहीं से मौलाना हसरत मोहानी के अंदर देश को आज़ाद कराने की एक नई चेतना पैदा हुई थी। वह हमेशा से बागी और इंकलाबी रहे। मौलाना हसरत मोहानी ने अलीगढ़ से स्नातक करने के फौरन बाद सरकारी या निजी नौकरी करने के बजाए पत्रकारिता और राजनीति को अपने लिए पसंद किया। इन्होंने **"उर्दू-ए मोअल्ला"** के नाम से एक पत्रिका का Declaration दाखिल करके प्रकाशन आरंभ किया। साथ ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। 1904-1907 तक मौलाना हसरत मोहानी ने कांग्रेस के तमाम वार्षिक अधिवेशनों में शिरकत की। 1907 में जब सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का बायाबाजू (Left wing) के नेताओं ने जब सुझाव दिया कि ब्रिटिश सरकार जिस तरह का बर्ताव और आचरण कर रही है उसके पश्चात शक्ति से मसला हल नहीं होने वाला है बल्कि हमें स्वतंत्रता पाने के लिए कठोर प्रयास करना पड़ेगा। इससे इससे गरम और नरम दल में मतभेद गहराये। तिलक ने कांग्रेस छोड़ दी। मौलाना हसरत मोहानी ने भी तिलक के नेतृत्व में पार्टी के दूसरे कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस से अपना नाता तोड़ दिया। यह ऐसा समय था जब मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा जैसी पार्टियों का जन्म हो चुका था। मौलाना हसरत मोहानी ने इन दोनों पार्टियों और कांग्रेस के नरम दल से कोई संबंध नहीं रखा। बल्कि रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारी नेताओं से निकट के संबंध बनाए।

गोपनाथ अमन के अनुसार- बहुत प्रसिद्ध कविता-

**"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है"।**

अक्सर कहा जाता है कि यह राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखी, लेकिन यह बिस्मिल ने नहीं बल्कि मौलाना हसरत मोहानी ने लिखी थी और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को समर्पित किया था।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी में जहां वह विद्यार्थी थे, अंग्रेजों के खिलाफ पहली बार इंकलाबी आवाज़ मौलाना हसरत मोहानी ने ही बुलंद की थी।

"इंकलाब जिंदाबाद" का नारा पहली बार मौलाना हसरत मोहानी ने ही अलीगढ़ मुस्लिम कॉलेज में 1921 में लगाया था। मौलाना हसरत मोहानी पर्दे की प्रथा के सख्त खिलाफ थे। महिलाओं की स्वतंत्रता की हिमायत करते थे। यह बात उस समय की है जब हिंदुओं में भी पर्दे की रस्म आम थी।

1903 का वर्ष मौलाना हसरत मोहानी का जीवन का सफर एक संघर्षशील था। इसी समय इन्होंने अपनी

मासिक पत्रिका **"उर्दू ए मोअल्ला"** के नाम से निकाली। जिसमें उनके राजनीतिक विचार, साहित्यिक, व धार्मिक आस्थाओं का वर्णन है।

इसका पहला अंक जुलाई 1903 में प्रकाशित हुआ। मौलाना हसरत मोहानी ने। विशेषकर मुसलमानों को राजनीति में हिस्सा लेने की तरकीब एवं हिदायत दी थी।

- **स्वदेशी आंदोलन में योगदान(1905)**—मौलाना हसरत मोहानी शुरू से ही कांग्रेस के गरम दल में शामिल थे। नरम दल के खिलाफ थे। इन्होंने स्वदेशी आंदोलन के दौरान अलीगढ़ में स्वदेशी स्टोर खोला था। इसी समय इन्होंने अपने परिवार के लोगों तक विदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल को हाराम कर दिया था। इसके बाद इस आंदोलन को बढ़ावा देने लग गए।
- **होमरूल आंदोलन(1917)**—उत्तर प्रदेश में होमरूल आंदोलन नगर नगर फैल गया, कानपुर इससे अछूता ना रहा। इसमें मौलाना हसरत मोहानी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। गरमदल-नरमदल, हिंदू-मुस्लिम, तिलक, मौलाना हसरत मोहानी, महात्मा गांधी, एनी बेसेंट आदि का पवित्र संगम हो गया।

खिलाफत आंदोलन(1919)—जलियावाला हत्याकांड से देश के सभी भागों में बेचैनी थी। उधर एक ओर ही गर्मी देश में बढ़ रही थी। इस गर्मी से देश के मुसलमान बेचैन हो रहे थे। यह गर्मी थी खिलाफत की। इस समय मौलाना हसरत मोहानी समेत तमाम बड़े मुस्लिम नेता कांग्रेस के साथ थे। मौलाना हसरत मोहानी की **"उर्दू-ए मोअल्ला"** ने देश के लोगों तथा मुसलमानों में जोश भर दिया था जिससे इस आंदोलन को एक नया जोश मिला।

1921 के अहमदाबाद अधिवेशन में मौलाना हसरत मोहानी ने सम्पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। यहां तक ये भी कहा कि हमें संपूर्ण स्वतंत्रता के लिए आंदोलन शुरू कर देना चाहिए।

1929 के लाहौर अधिवेशन में मौलाना हसरत मोहानी की संपूर्ण स्वतंत्रता की मांग को पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने अपने लाहौर अधिवेशन 1929 में पास करवाया था।

निष्कर्ष- मौलाना हसरत मोहानी जी हमारे देश की उन विभूतियों में से एक हैं, जिनका मूल्यांकन करना इतना आसान नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने अपने जीवन में समाज और राष्ट्र को बहुत कुछ दिया है, लेकिन भौतिक कसौटी पर उन्हें क्या किसी को भी कसने से उनके साथ पूरा न्याय नहीं होता।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में मौलाना हसरत मोहानी का योगदान बहुत सराहनीय रहा। उनके इस योगदान को भारतीय इतिहास में भुलाया नहीं जा सकता है। इन्होंने अपने मुल्क की आज़ादी के लिए सब कुछ अपना न्योछावर कर दिया। इनका बलिदान गुलाम भारत को आज़ाद कराने में एक आधार बना।

संदर्भ

1. मासिक निगार हसरत नवंबर-1953, उत्तर प्रदेश स्वाधीनता संग्राम की झांकी-सूचना एवं जन संपर्क विभाग उ०प्र०-लखनऊ, कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर
2. खदीजा अजिम नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया
3. इंदुलाल याज्ञनिक- गांधी मेरी निगाह
4. कदम पुराने, नई राहें, भाग-10
5. आजकल पटियाला हाउस नई दिल्ली-1985
6. बेचैनी के आसार, प्रकाशित उर्दू- ए मोअल्ला, मई-1907
7. History of freedom movement volume-3 part-1